१ओअंकार (१ੴ) सतिगुर प्रसादि

चुनाव, शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी, अमृतसर

जागृति

शिरोमणी कमेटी के चुनाव में एक चुनाव अधिकारी ने एक भईये मतदाता से कोतुवल वश पूछा: - तुम कौन से सिक्ख हो ?इस पर उसने उत्तर दिया जी मैं इच्छाधारी सिक्ख हूँ! अब आप स्वयं अनुमान लगा सकते है कि सत्ताधारी किस हद तक गिर कर धांधली कर सकते है!!

पंथ दोखी पक्ष, राष्ट्रीय संगत के रूप में घुस-बैठ करने का दाव खेलने के लिए तैयार खड़ा है। अब समय रहते हमें धैर्य से विचार करना होगा कि गुर मर्यादा में कहीं चुनाव का स्थान है भी कि नही! जहां तक इतिहास साक्षी है गुरूजनों ने अपने जीवन काल में **'तख्ति बहै तख्तै की लाइक'** महावाक्य अनुसार किसी योग्य पुरुष का चयन ही किया था ना कि चुनाव।

क्रांतिकारी जगद् गुरू नानक देव चैरिटेबल टस्ट, चण्डीगढ़

लेखक : जसबीर सिंघ

Mob. : 09988160484, 623904 5985

Type Setting : Radheshyam Choudhary
Mob. : 098149- 66882

Download Free

जागृति

चुनाव, शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी, अमृतसर

भूमिका

वर्तमान काल में शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी राज नेताओं के दबाव के कारण अपने मूल लक्ष्य से भटक गई है और वह गुरुमति प्रचार-प्रसार की ओर ध्यान केन्द्रित न कर अपने हितों के लिए संघर्ष रत रहती है अत: राजनेतिज्ञों ने SGPC जैसी पवित्र संस्था पर अपनी पकड़ मज़बूत कर उसे अपने हितों के लिए उसके संसाधनों का दूरोपयोग करना प्रारम्भ कर दिया है जिस कारण यह संस्था भ्रष्टाचार की ओर ग्रस्त होती चली जा रही है-प्रमाण स्वरूप पंजाब में पतित पन का बोल-बाल हो गया है।

गुरमति सिद्धांत तो यह था राजनीति धर्म के अंतरगत होनी चाहिए थी परन्तु अभी उल्टी गंगा बेह रही है अब राजनीति धर्म पर भारी पड़ रही है। इसलिए धर्म कही दिखाई नहीं देता?

यही कारण है कि पंजाब अब लम्बे समय से ड्रग माफिओं का अखाड़ा बना हुआ है।

जागृति

चुनाव, शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी

सैद्धांतिक रूप में लोक तान्त्रिक प्रणाली ही दुनियां का सर्वोत्तम प्रशासनिक पद्धति मानी जाती है परन्तु व्यावहारिक रूप में दुनियां की सब से भ्रष्ट प्रणाली दृष्टिगोचर होती है। वास्तव में जितने आदर्शिक सिद्धांत इस प्रणाली के पास है और किसी प्रणाली के पास नहीं है परन्तु इसकी चुनाव प्रणाली अथवा चुनाव प्रक्रिया उतनी ही अनैतिक विधि-विधान से भरपूर, भ्रष्ट और सदाचार से कोसों दूर है। कोई क्योंकि भ्रष्ट राजनितिज्ञों अपने पैसों क्या झूठ आधारित भाषाणें से जनसारण को दृष्टिभ्रमित कर देता है। परिणाम स्वरूप अवांछनीय तत्व, सत्तारूढ़ हो जाते है जिनका एक मात्र लक्ष्य जनता का शोषण करना तथा सरकारी कोश को घोटाले के बल पर अपनी तिजौरी में भरना अथवा धन का निजि स्वार्थो के लिए दुरूपयोग करना होता है। आज प्रस्थितियाँ यहां तक पहुंच गई है कि कोई भी उम्मीदवार किसी आदर्श देश भक्ति अथवा समाज सेवा इत्यादि की भावना से चुनाव नहीं लड़ता बल्कि उस का पूर्णत: उद्देश्य नेतागिरी से ऐश्वर्य तथा धन बटोरना ही होता है। इस लिए उनका मानना होता है- सत्ता हथियाने के लिए कुछ भी किया जा सकता है अभिप्राय: यह कि वे अपना नारा रखते है 'प्यार और राजनीति' में आचर्ण हीनता की सीमा पार की जा सकती है। भाव यह कि उन लोगों के लिए नैतिक मूल्य नाम की कोई वस्तु ही नही होती। ये भष्टाचारी दृष्टिभ्रमित ना करवाएं इसलिए धर्म का गहन ज्ञान अनिवार्य है।

जहां पर सत्ताधारियों का आर्चण अथवा चरित्र शून्य होगा वहां मानव मूल्य कहां पर रह जाते हैं। इसी लिए "जैसा राजा तैसी प्रजा" कहावत के अनुसार सारा समाज अनैतिकता की गहरी खाई में गिरता चला जा रहा है। दुरभाग्य वश सिक्खों की सर्वोत्तम संस्था, शिरोमणी गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी ने भी यही चुनाव प्रणाली अपना कर अपने धार्मिक अनयाई कों में अपने दिवालिये पन का प्रदर्शन किया हुआ है। शायद इसी लिए सिक्ख समाज में गुरू से विमुखता तथा पतित पन की लहर बढ़ती चली जा रही है क्योंकि हमारे निर्वाचित प्रतिनिधि अयोग्य और निक्कमे होते है। तथा जावबूझ कर सत्य के प्रचारकों पर प्रहार कर लें।

इसी चुनाव पद्धति के द्वारा आये दिन स्थानीये गुरूद्वारों में माया तथा नेता-गिरी की भूख के कारण कई अनाधिकारी चुनाव लड़ने के लिए उम्मीदवार बन जाते है और पवित्र धार्मिक स्थान को युद्ध स्थल में बदल कर एक दूसरे की पगड़ियां उछालते है। यह भाई मारू युद्ध कई बार गम्भीर रूप धारण कर के पुलिस केस बन जाता है और फिर मुक्कदमें बाजी प्रारम्भ हो जाती है इस प्रकार गुरू घर का रुपया व्यर्थ में वकीलों अथवा अदालतों में नष्ट कर दिया जाता है। जब संगत इन बड़े लोगों की करतूतें देखती है तो उनका मन बहुत खिन्न होता है। कई बार तो युवा पीड़ी यह कहते सुनी जाती है कि गुरूद्वारे राजनीति के अखाड़े बन गये है अत: यहां गुट्ट बंदी रहेगी वहां धर्म ने तो अलोप होना ही है। इसी लिए हमने गुरू घर आना-जाना ही छोड़ दिया है..... इत्यादि!!!

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या गुरूद्वारों में चुनाव होना अवश्यक है?क्या दूसरे मत-मत्तांतरों वाले, अपनी साम्प्रदायिक प्रचार के लिए अपनी संस्थानों का चुनाव मत दान करवा कर करते हैं?उत्तर मिलेगा नहीं। केवल और केवल एक मात्र सम्प्रदाय है, वह है सिक्ख जो अपनी धार्मिक संस्थाओं का चुनाव मतदान द्वारा करते हैं जबकि अन्य

मतावलम्बी चुनाव न करके चयन करते हैं अर्थात Election नहीं Selection जिसका सीधा सा अर्थ है कि सुयोग्य मनुष्य को ही ऊँच्चे पदों पर आसीन किया जाता है। परन्तु सिक्खों में भ्रान्तियां फैलाई जाती है कि चुनाव पंचायती पद्धति है अर्थात पांच प्यारा नियमावली है। परन्तु यह व्याख्या बिलकुल गुमराह करने वाली होती है। जबकि वास्तविकता इसके विपरीत यह है कि गुरू गोबिन्द सिंघ जी ने हमें अपने जीवन काल में पांच प्यारों को चुनने का नियम दर्शाया है जो कि चयन था अर्थात जीवन-मृत्यु की कड़ी परीक्षा ली थी। जो उस संघर्ष में उत्तीर्ण हुए वहीं पांच प्यारे कहलायें। भाव यह कि गुरूदेव ने उन्हें कड़ी परीक्षा लेकर पांच प्यारों के रूप में चयन किया था न कि मत दान करवा के चुनाव करवाया था।

अब प्रश्न उठता है कि हमारे यहां यह चुनाव प्रणाली कहां से आ धमकी?उत्तर यही है कि हमारे नेता गण जब गुरूद्वारा सुधार आन्दोलन में विजयी होकर जेलों से वापस लोटे तो उन्होंने अंग्रेज सरकार को बाध्ये कर दिया कि वह गुरूद्वारों के संचालन के लिए एक विशेष कानून बनाये। जिसे बाद में गुरूद्वारा ऐक्ट का नाम दिया गया।

जिन दिनों गुरूद्वारा सुधार लहर के अंदोलन में सिक्खों ने विदेशी सरकार को लम्बे संघर्ष के पश्चात पराजित किया। उन्हीं दिनों लोक तान्त्रिक पद्धति का जोरों-शोरों से अंग्रेज प्रचार कर रहे थे ओर भारत में भी कुछ प्रदेशिक सरकारे इसी विधि अनुसार निर्वाचित की गई थी। जन साधारण में इस नियमावली को पंचायती प्रणाली की संज्ञा दी जा रही थी अत: इस की थियौरी बहुत आकर्षित होने के कारण भोले पन में सिक्खों के तत्कालीन नेताओं ने इसे स्वीकार कर लिया तथा गुरूद्वारा ऐक्ट बनवाते समय चुनाव प्रणाली में इसी पद्धति को स्वीकृति प्रदान कर दी क्योंकि वे लोग इस प्रणाली के व्यावारिक स्वरूप को नहीं जानते थे। वास्तव में वे निष्ठावान तथा समर्पित लोग थे जो कि छल कपट की दुनियां से कोसों दूर थे। इस लिए उनको इस प्रणाली की विपरीत दिशा अथवा अंधकारमय भाग दृष्टिगोचर नहीं हुआ। गुरूद्वारा ऐक्ट बनने के पश्चात जैसे ही चुनाव की घोषणा हुई तो उस समय स्वार्थी लोगों ने चुनाव लड़ने की योजना बनाई। जिनका एक मात्र लक्ष्य नेतागिरी करना तथा गुरू की गोलक/धनकोश/का दुरूपयोग करना अथवा स्वार्थो के लिए घोटाले करना था। इन लोगों में से अधिकांश सिक्ख सिद्धांतों को भी पूरी तरह पालन नहीं करते थे अथवा उनको सिक्ख सिद्धांतों का ज्ञान भी नहीं था और न ही इन में से किसी ने अंग्रेजों के साथ संघर्ष में कोई कुरबानी ही की थी अथवा संघर्ष में भाग लिया था। वे तो केवल बने बनाये खेल में नायक बनना चाहते थे। हुआ भी ऐसे ही अधिकांश स्वार्थी लोगो ने शिरोमणी गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी के चुनाव लड़े और अनैतिक हथकण्डों से चुनाव जीत गये। जबकि वे लोग नहीं जानते थे (SGPC) में उनका क्या कर्त्तव्य है। वे तो केवल यही जानते थे कि प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए अथवा विधान सभा, लोक सभा चुनाव जीतने की यह पहली सीड़ी है।

ऐसे लोगों के जमघट को देखकर अकाली नेता मास्टर तारा सिंह जी ने कहा- मैंने अपने अध्यापकी जीवन काल में कभी किसी भी शराबी अध्यापक को स्वीकार नहीं किया था। "यदि मुझे मालुम हो जाता कि अध्यापक शराब का सेवन करता है तो मैं उसे स्कुल से निकल कर ही दम लेता था। क्योंकि मेरा मानना था कि जो अध्यापक शराब पीता है वह विद्यार्थियों को क्या शिक्षा देगा?परन्तु आज मुझे बहुत दुख के साथ बताना पड़ रहा है कि गुरूद्वारा ऐक्ट के अन्तर्गत शराबी लोग (SGPC) के सदस्यों के रूप में स्वीकार करने पड़े रहे है। अत: वह गुरुद्वारा ऐक्ट पर पश्चाताप करते हुए कहते कि यही हमारी अद्योगति का कारण बन रही है। क्योंकि लोक तान्त्रिक प्रणाली में बहुतम का बोल-बाला होता है, भले ही वे गलत हो। जैसे कि आप जानते ही है सूझवान व्यक्तियों की गिनती सदैव कम होती है। इसके विपरीत अज्ञानी मनुष्यों की संख्या कई गुणा अधिक। यदि बहुमत 51% भेडों का हो तो वे 49% प्रतिशत शेरों

पर शासन कर सकती है अर्थात् ज्ञान की नहीं, यहां गिनती की आवश्यकता है। जब ज्ञान के स्थान पर गिनती को महत्त्व दिया जाये तो समाज में अनैतिकता और भ्रष्टाचार ही फैलेगा। फलस्वरूप अत्याचार और अन्याय बढेगा ही और गरीबों का शोषण बढ़ता जाएगा। जिसके परिणाम में उग्रवाद अथवा आतंकवाद उत्पन्न ही होंगे।

उदाहरण के लिए आप के समक्ष शिरोमणी गुरूद्वारा प्रबंधक कमेटी का एक दृश्य प्रस्तुत करना चाहता हूँ। पिछले दिनों की बात है दिल्ली में गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी के चुनाव हो रहे थे। उस समय एक पक्ष के उम्मीदवारों ने गुरमति विरोधी आचरण अपनाया और मतदाताओं को आकर्षित करने के लिए उन्हें (खुलेआम) शराब का सेवन कराया जो कि धर्म के नाम पर कलंक है। जब वह गलत अथवा जाली मतदाताओं की सूचियों के बल पर चुनाव जीत गये तो उन्होंने गुरू की गोलक में घोटाले किये वे यहां तक गिर गये कि गुरू घर की सम्पति पर अवैध कब्जा कर लिया जब विपक्ष ने उनकी करतूतों का पर्दाफाश किया तो बहुत कठिनाई से वह इमारतें वापस ली गई जिन को वे बेचकर सदैव के लिए समाप्त करने का षड्यन्त्र रच रहे थे।

आपको शायद याद होगा भारत की राजनीति में एक ऐसा समय भी आया था जब आपातकालीन घोषणा के विरूद्ध अकाली दल ने शिरोमणी गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी (अमृतसर) के सहयोग से मोर्चा लगाया (आंदोलन चलाया) था। अन्य राजनीति दल तो पराजित होकर आंदोलन छोड़ भाग खड़े हुए परन्तु सफलता केवल (SGPC) को सहयोगी दल, अकाली पार्टी को मिली। इस पर केन्द्र बोखला उठा उन्होंने एक षड्यन्त्र पूर्ण योजना बनाई और (SGPC) पर वैध कब्जा करने की ठान ली। इस योजना के अंतर्गत तत्कालीन केन्द्रीय गृह मंत्री सरदार जैल सिंघ चण्डीगढ आये और उन्होंने कुछ गणमान्य सिक्खों को एक होटल में आमंत्रित करके वहां पर दल खालसा संगठन की आधारशिला रखी और उसको केन्द्र सरकार की ओर से (SGPC) के चुनाव जीतने के लिए वित्तिय तथा अन्य सहायता दी। इस षड्यन्त्र में केन्द्र सरकार का मुख्य उद्देश्य था कि जिस प्रकार अंग्रेज सरकार गुरूद्वार ऐक्ट बनने से पहले सिक्खो के लिए एक 'सर्बराह' नियुक्त करके अपने नियन्त्रण में रखती थी ठीक इसी प्रकार अपनी कठपुतल (SGPC) निर्वाचित करवा के अकाली दल तथा स्वतन्त्र विचारधारा वाले सिक्खों को नियन्त्रण में रख सकेगी क्योंकि उनसे नेतृत्व शक्ती तथा धन शक्ती दोनों ही छिन कर केन्द्र के पास उनके कठपुतलीयों द्वारा पहुंचे जायेगी। परन्तु ऐसा सम्भव नहीं हुआ क्योंकि पंजाब के ग्रामिण क्षेत्रों में सिक्खों का विश्वास था कि भले ही राजनीति रूप में हम मतदान अकाली दल को न दे परन्तु (SGPC) को दूसरे मत पत्र अवश्य ही देना है उनका मानना होता था कि एक मत पंथ का हमारे पास सुरक्षित है जो हम केवल उन्हें ही देंगे इस लिए दल खालसा (SGPC) के चुनाव में पराजित हो गया। जिससे केन्द्र सरकार की कूटिल नीति और षड्यन्त्र दोनों बूरी तरह विफल हो कर रह गई परन्तु वह अब पुन: इसी कूटिल नीति को नये षड्यन्त्र द्वारा पिछली भूल को सुधार कर नया खेल खेलना चाहते हैं उन्होंने इस बार सहजधारी सिख के नाम पर नये मत दाता भर्ती करने प्रारम्भ कर दिये है जो कि वास्तव में सिक्ख नहीं और न ही सिक्ख सम्प्रदाय से उनका कुछ लेना देना है वह केवल एक राजनीतिक हथकड़े के रूप में मतदाता सूचियों में होंगे और अपने मत का प्रयोग कठपुतली उम्मीदवार के पक्ष में करोंगे जिससे कठपुतलीयों के बल पर (SGPC) पर पूर्ण रूप में नियन्त्रण किया जा सके। मन-माने कार्य करके सिक्ख पंथ को अंधे कूएं में धकेला जा सके। जिससे सिक्खों की आवाज सदा के लिए समाप्त की दी जाए परन्तु सिक्ख पंथ आने वाले खतरे से सावधान है और वह ऐसे षड्यन्त्र सफल नहीं होने देंगे।

आप को याद होगा सन् 1984 में 'सरबत खालसा' सम्मेलन सिक्ख पंथ द्वारा बुलाया गया था उसके मुकाबले समानान्तर में सरकारी पक्ष ने मुख्य मन्त्री हरियाणा भजन लाल के नेतृत्व में एक 'सरबत खालसा' सम्मेलन की नकल

के रूप में, अमृतसर नगर में एक समारोह का आयोजन किया जिससे हरियाणा के मज़दूरों को देहाड़ी पर करके ट्रकों में भर कर और सिर पर अंगोचा लपेट कर सम्मेलन स्थल पर बल पूर्वक बिठा दिया गया और भारी भीड़ दर्शाने का असफल प्रयास किया गया जबकि वह बीडियां पीते और खैनियां खाते टी.वी. पर दृष्टिगौचर हो रहे थे।

इस समय हमें सबसे पहले 'सहजधारी' सिक्ख की परिभाषा जानना अवश्यक हो गया है:- 'सहजधारी सिक्ख' वह व्यक्ति है जो पूर्णत: दस गुरू सहबान तथा गुरू ग्रंथ साहिब पर पूर्ण विश्वास रखते हो और सिक्ख सिद्धांतों के अनुसार मूर्ति पूजा, देवी-देवते तथा कर्मकाण्डों को न मान कर केवल सर्वशक्तिमान अकाल पुरुष (पारब्रह्म परमेश्वर) पर पूर्ण आस्था रखता हो और जिसने यह प्रतिज्ञा की हो कि मैं सहज-सहज (धीरे-धीरे) में पूर्णत:) सिक्ख स्वरूप धारण करूंगा अथवा अपनी भावी पीड़ी को केशधारी सिक्ख बनाकर अमृत धारण करवाऊगां। वही सहजधारी सिक्ख है। सिक्ख पंथ को अपने सहजधारी सिक्खों पर गर्व है। इन सहज धारियों ने समय-समय पर अथवा विपती काल में हर प्रकार की पंथ को सहायता दी है और पंथ को कभी नीचा नहीं देखने दिया। समय पाते ही वे अपने परिवारों में से बहुत से युवकों को केशाधारी सिंघ सजाकर, शहीद हो गये। सिंघों के स्थान पर योद्धाओं की अपूर्ती करते रहे हैं और इस प्रकार यह कारवाँ आगे बढ़ता चला आ रहा है। आज हमें इन सहज धारी सिक्खों को (SGPC) के चुनाव में अपना मतदान करने का अधिकार देकर अति प्रसन्नता होती है। परन्तु आज देखना यह है कि जिन लोगों को मतदाता सूचिओं में सम्मिलित किया जा रहा है क्या वह वास्तव में सहजधारी सिक्ख है भी अथवा बेरूपिया लोग है जो राजनीतिक कारणों से हमारी चुनाव प्रणाली द्वारा मतदान के बल पर हस्तक्षेप करके सरकार अथवा RSS का पक्ष तो नहीं निभा रहें?

निष्कर्ष

हर चमकने वाली वस्तु सोना नहीं होती। किसी प्रकार जो सिद्धांत पढ़ने तथा सुनने में अच्छे मालुम होते है। वह जरूरी नहीं है कि व्यावहारिक रूप में भी उतने ही अच्छे हो। उदाहरण के लिए आप एक धार्मिक संस्था का चुनाव करवाते हैं तो स्वाभाविक कि वहां वे लोग भी ऊँचे पदों पर आसीन होने की होड़ में आयेंगे जो अनाधिकारी तथा अयोग्य है। अत: चुनाव जीतने के लिए सभी अनुचित कार्य भी करेंगे जो कि हमारी मर्यादा के विरूद्ध हैं अगर वे बहुमत प्राप्त कर गये तो कल को ये लोग घोषणा कर देंगे कि आज बहुमत शराबियों का है। अत: हम संगत के लिए धार्मिक प्रावधान/अचार संहिता में संशोधन करके इसमें (शराब) अथोराईज़ कर देते है तो क्या हम मान लेंगे?यह तो एक उदाहरण मात्र है कल्पना करो यदि बहरूपियों के रूप में वे हमारी सर्वोत्तम संस्था पर कब्जा कर लेते हैं और गुरूमति विरोधी कार्य करने के लिए कानून अथवा प्रावधान तैयार कर देते है तो हम क्या करेंगे?

लेखक :

जसबीर सिघ

Mob. : 09988160484, 623904 5985

Type Setting :

Radheshyam Choudhary

Mob. : 09149- 66882